वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 273
ISBN 978-93-80353-18-0

पुण्यास्रव विधान

–रचयित्री–

जम्बूद्वीप रचना की पावन प्रेरिका
गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

जम्बूद्वीप रचना रजत जयंती महोत्सव–2010 एवं
शांतिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं तीर्थंकरत्रय महामस्तकाभिषेक
महोत्सव (11 से 21 फरवरी 2010) के पावन प्रसंग पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र. फोन नं.- (01233) 280184, 292943
Website : www.jambudweep.org
E-mail : ravindrajain@jambudweep.org

COURTESY–JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2536	मूल्य
1100 प्रतियाँ	फरवरी 2010	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशन :–

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

–: सम्पादक :–

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन

प्रवचनसार ग्रंथ में आचार्य श्री कुन्दकुन्द ने कहा है–

जीव के शुभ, अशुभ परिणाम ही उसे तदनुसार फल प्रदान करते हैं। अशुभोपयोग से यह जीव तिर्यंच, नारकी एवं कुमानुष होकर सहस्रों दुःखों को सहन करता हुआ संसार परिभ्रमण करता है और धर्म से परिणत होकर शुभोपयोग से स्वर्ग सुख और शुद्धोपयोग से निर्वाण प्राप्त कर लेता है।

जीव के जब जन्म-जन्मान्तरों का पुण्य संचित होकर एक साथ उदय में आता है तो जिनधर्म एवं जिनवाणी सुनने का साधन प्राप्त होता है जिससे शुभोपयोग में जीव का समय व्यतीत होता है अन्यथा तो सभी संसारी प्राणी दिन रात अशुभोपयोग अर्थात् पाप क्रियाओं में संक्लेशित रहकर अपार कष्ट उठाते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि अशुभोपयोग से बचने के लिए प्रत्येक श्रावक को भगवान की भक्ति, पूजा, स्तोत्र पाठ, तीर्थयात्रा आदि करना चाहिए जो शुभोपयोग के अंग हैं। कुन्दकुन्दाचार्य के अनुसार श्रावक के लिए दान और पूजन दोनों आवश्यक कर्तव्य हैं। जिसमें पूजा के अन्तर्गत नित्य पूजाओं के अतिरिक्त नैमित्तिक पूजाओं में अनेकानेक मण्डल विधानादि की पूजाएँ की जाती हैं।

वर्तमान समय में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने सर्वप्रथम बालब्रह्मचारिणी के रूप में दीक्षा लेकर साहित्य लेखन का अनुपमेय कार्य किया जिसको हजारों वर्षों तक विस्मृत नहीं किया जा सकता है। अनेकों वृहद् विधान एवं लघु विधानों की धूम आज भारत के कोने-कोने में है। उन्हीं लघु विधानों की श्रृँखला में यह नूतन कृति ''पुण्यास्रव विधान'' है। इस विधान के माध्यम से भक्तजन प्रभु भक्ति का दिव्य स्रोत प्रवाहित कर कर्मनिर्जरा करते हुए पुण्य का बंध करें, यही जिनेन्द्र भगवान से मंगल प्रार्थना है।

प्रस्तावना

–ब्र.कु. इन्दु जैन (संघस्थ)

कर्मों के आने के द्वार को आस्रव कहते हैं। इसके दो भेद हैं– पुण्यास्रव और पापास्रव। अर्हंत भक्ति, जीवदया आदि क्रिया रूप शुद्धयोग से पुण्यास्रव होता है और जीवहिंसा झूठ आदि क्रियारूप अशुभ योग से पापास्रव होता है।

ज्ञानवरण, दर्शनावरण, वेदनीय, मोहनीय आदि आठों कर्मों में से मोहनीय कर्म सबसे बलवान माना जाता है जो संसारी प्राणी के कर्मबंध में प्रधान है। इसके दर्शनमोहनीय व चारित्रमोहनीय ये दो भेद हैं। सच्चे देव, शास्त्र, गुरु और धर्म में दोष लगाना दर्शनमोहनीय और कषायों की तीव्रता रखना, चारित्र में दोष लगाना, मलिन भाव करना आदि से चारित्र मोहनीय का आस्रव होता है। इस मोहनीय के 28 भेद भी हैं और असंख्यात भेद भी हैं। 108 प्रकार से हमारे पापास्रव होते हैं। जैसे– समरम्भ, समारम्भ, आरम्भ (अर्थात् कार्य करने के लिए सोचना, सामग्री जुटाना और कार्य प्रारंभ करना) को मन, वचन और काय से गुणा करें, पुनः इनको कृत, कारित, अनुमोदना से गुणा करें, पुनः इनको भी क्रोध, मान, माया औरलोभ इन चार कषायों से गुणा करें तों 3×3×3×4=108, इस प्रकार 108 भेद हो गए।

जब हम पंचपरमेष्ठी के गुणानुवाद स्वरूप जाप्य-माला करते हैं तो उसमें 108 दाने होते हैं और हम 108 बार भगवान का नाम लेकर रत्नत्रय स्वरूप ''सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्राय नमः'' इस प्रकार 3 मोतियों पर निम्न मंत्र पढ़कर जाप्य माला पूरी करते हैं। प्रश्न यह उठता है कि माला में 108 दाने ही क्यों? तो इसका उत्तर है माला में 108 दाने इन्हीं 108 पापास्रव का क्षय करने हेतु होते हैं और इसीलिए हम 108 मणियों से भगवान का नाम जपकर पुण्य का आस्रव करते हैं।

इन्हीं 108 पापास्रवों को रोकने एवं पुण्यास्रव का बंध कराने हेतु परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने ''पुण्यास्रव विधान'' की रचना की है जो कि स्वयं में अनूठा है। इस पूजा विधान में सर्वप्रथम पंचपरमेष्ठी वंदना, पुनः पुण्यास्रव विधान की समुच्चय पूजा है। पूजा के बाद पापास्रव का क्षय करने वाले 108 अर्घ्य हैं और 4 पूर्णार्घ्य हैं। जयमाला में तो पूज्य माताजी ने गागर में सागर के समान कर्मास्रव को रोकने और उनसे छूटने का विशद वर्णन किया है जिसे पढ़कर हम शुभ कर्मों की ओर अवश्य ही प्रेरित होंगे। भगवान शांतिनाथ की जन्मभूमि जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में लिखा गया यह मंगलकारी विधान भक्तों के मनोरथों को पूर्ण कर उन्हें शुभ कर्मों के बंध में प्रवृत्त करे, जिससे क्रमशः मुक्तिकन्या की प्राप्ति हो सके, यही शुभेच्छा है।

विधान की रचयित्री, परमपूज्य गणिनीप्रमुख

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991(सन् 1934)

गृहस्थ का नाम–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से।

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में।

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 250 विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तीर्थ का निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा–भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा निर्माण की प्रेरणा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 में हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं–

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।
2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।
3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।
4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है–कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना एवं नवग्रहशांति जिनमंदिर।
5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।
6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।
7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।
8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।
9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।
10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।
11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।
12. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना से समन्वित हीरक जयंती एक्सप्रेस।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं शारीरिक सुख की प्राप्ति करें।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खी बावली, दिल्ली।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली

मण्डल के विधान का नक्शा

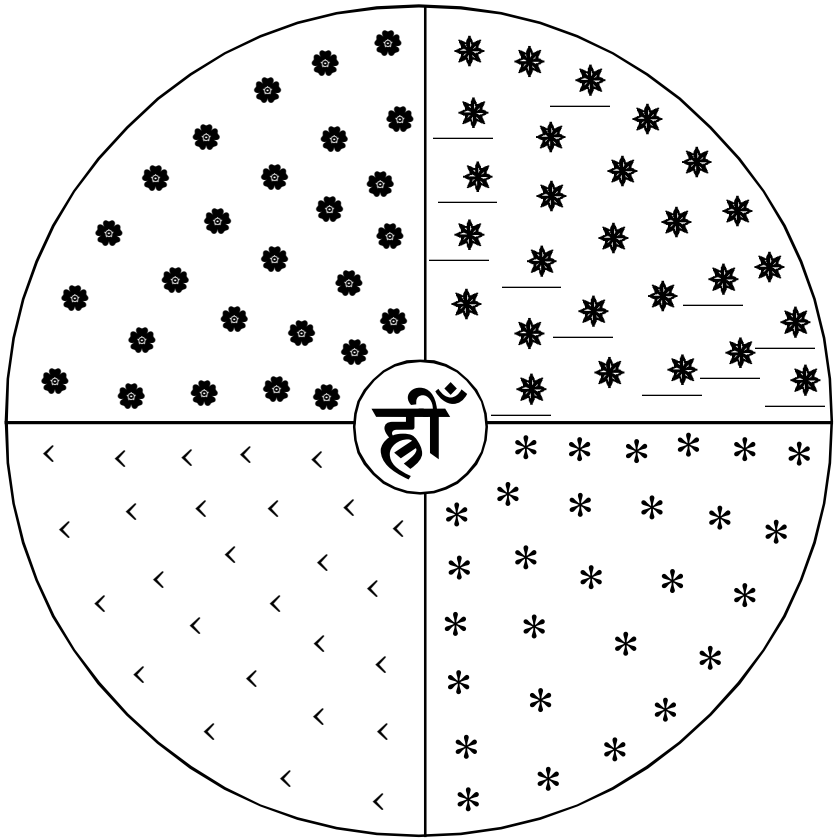

प्रथम वलय में	–24 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य
द्वितीय वलय में	–24 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य
तृतीय वलय में	–24 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य
चतुर्थ वलय में	–24 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य
कुल	–108 अर्घ्य एवं 4 पूर्णार्घ्य

नवदेवता पूजन

–गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

–गीता छन्द –

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वर, मूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।
नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहाँ, मन में अतुल श्रद्धा धरें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालय-समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालय-समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालय-समूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक –

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को, नीर से पूजूँ मुदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधी के फेन सम सित, तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नवसु चढ़ायके।।

नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगन्धित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतू, पूजहूँ नत भाल मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जगमगे, दीपक लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्या मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं।।

नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह, बस अर्घ्य से पूजत मिले।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **जलधारा से नित्य मैं, जग की शांति हेत।**
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

नानाविध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नव देवता, पुष्पांजली चढ़ाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

***जाप्य –*ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः।**

जयमाला

–सोरठा –

चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हो।
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा।।1।।

(चाल-हे दीनबन्धु श्रीपति.....)

जय जय श्री अरिहंत देवदेव हमारे।
जय घातिया को घात सकल जंतु उबारे।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।।2।।
आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।

जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी।।3।।
जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा।।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।4।।
जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।
जिन की ध्वनि पीयूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे।।5।।
जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।6।।
नव देवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूँ।।7।।

दोहा – **नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम।**
भक्ती का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से, नवदेवता पूजा करें।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।।
नवनिधि अतुल भंडार ले, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहाँ पर कभी न आवते।।9।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

पुण्यास्रव विधान

वंदना

–स्रग्विणी –

सिद्ध की वंदना सर्व आस्रव हरे।
वंद्य अर्हंत को पुण्य आस्रव भरें।।
सूरि पाठक सभी साधु को वंदते।
पाप आस्रव टरें दुःख को खंडते।।1।।

मैं नमूँ मैं नमूँ पंच परमेष्ठि को।
रोक शोकादि मेरे सबे दूर हों।।
शुद्ध सम्यक्त्व हो ज्ञान ज्योती जगे।।
शुद्ध चारित्र हो कर्मशत्रू भगें।।2।।

जो जजें नाथ को सर्वसंपत् भरें।
पुण्य आस्रव यजन से महादुख हरें।।

धन्य जीवन करें पुण्य लक्ष्मी वरें।
फेर संसार का परिभ्रमण परिहरें।।3।।

सांपरायीक आस्रव सदा काल में।
ये कषायों सहित हो रहा जीव में।।
ये गुणस्थान दशवें हि पर्यंत हो।
ये कषायें नशें कर्म आस्रव न हो।।4।।

केवलीनाथ ईर्यापथास्रव धरें।
वेदनीसात आवे उसी क्षण झरे।।
वे निरास्रव बनें सिद्धपद पावते।
सिद्ध वंदत मिले स्वात्मसुख शाश्वते।।5।।

अथ विधियज्ञप्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

पुण्यास्रव विधान-पूजा

–अथ स्थापना (शंभु छंद)–

अर्हंत जिनेश्वर सांपरायिक, आस्रव से रहित पूर्ण ज्ञानी।
ये पुण्य के फल हैं पुण्यराशि, पुण्यास्रव के कारण ज्ञानी।।
हम इनका आह्वानन करके, भक्ती से अर्चा करते हैं।
इनकी पूजन से पापास्रव, नहिं हो यह वांछा करते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वास्रवविरहित-श्री अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सर्वास्रवविरहित-श्री अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं सर्वास्रवविरहित-श्री अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक - शंभु छंद –

सरयू नदि का प्रासुक जल ले, कंचन झारी भर लाये हैं।
जिनवर पद में त्रयधारा कर, भव तृषा बुझाने आये हैं।।
पापास्रव पुण्यास्रव विरहित, ईर्यापथ आस्रव के स्वामी।
पुण्यास्रव सातिशयी होवे, तुम पूजत हों शिवपथगामी।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वास्रवविरहित-श्री अर्हत्परमेष्ठिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन केशर संग, घिसकर कंचनद्रव सम लाये।
जिनवर पद चर्चत वात पित्त, कफ जनित रोग सब नश जायें।।
पापास्रव पुण्यास्रव विरहित, ईर्यापथ आस्रव के स्वामी।
पुण्यास्रव सातिशयी होवे, तुम पूजत हों शिवपथगामी।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वास्रवविरहित-श्री अर्हत्परमेष्ठिने संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतीसम उज्ज्वल शालि धुले, जिन सन्मुख पुंज चढ़ाते हैं।
सब द्रव्य भाव मल धुल जावे, शुद्धात्म भावना भाते हैं।।

पापास्रव पुण्यास्रव विरहित, ईर्यापथ आस्रव के स्वामी।
पुण्यास्रव सातिशयी होवे, तुम पूजत हों शिवपथगामी।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वास्रवविरहित-श्री अर्हत्परमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपा बेला अरविंद वकुल, सुरभित पुष्पों को लाये हैं।
निज आत्म गुणों की सुरभि हेतु, जिनचरणों पुष्प चढ़ाये हैं।।
पापास्रव पुण्यास्रव विरहित, ईर्यापथ आस्रव के स्वामी।
पुण्यास्रव सातिशयी होवे, तुम पूजत हों शिवपथगामी।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वास्रवविरहित-श्री अर्हत्परमेष्ठिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरणपोली लाडू बरफी, सेमई खीर ले आये हैं।
सब उदर व्याधि प्रशमन हेतू, प्रभु सन्मुख चरू चढ़ाये हैं।।
पापास्रव पुण्यास्रव विरहित, ईर्यापथ आस्रव के स्वामी।
पुण्यास्रव सातिशयी होवे, तुम पूजत हों शिवपथगामी।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वास्रवविरहित-श्री अर्हत्परमेष्ठिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत पूरित कंचन दीप लिये, जगमग ज्योती सब ध्वंस हरे।
आरती करें जिनवर सन्मुख, अंतर में ज्ञान प्रकाश भरे।।
पापास्रव पुण्यास्रव विरहित, ईर्यापथ आस्रव के स्वामी।
पुण्यास्रव सातिशयी होवे, तुम पूजत हों शिवपथगामी।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वास्रवविरहित-श्री अर्हत्परमेष्ठिने मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुगंधित धूप यहाँ, बस धूप घटों में खेते ही।
सब अशुभ कर्म जल जाते हैं, मन देह स्वस्थता प्रगटे ही।।
पापास्रव पुण्यास्रव विरहित, ईर्यापथ आस्रव के स्वामी।
पुण्यास्रव सातिशयी होवे, तुम पूजत हों शिवपथगामी।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वास्रवविरहित-श्री अर्हत्परमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

एला केला अंगूर आम, फल मधुर चढ़ाते हैं प्रभु को।
सब ईप्सित फल जाते तत्क्षण, रत्नत्रय फल भी दो मुझको।।
पापास्रव पुण्यास्रव विरहित, ईर्यापथ आस्रव के स्वामी।
पुण्यास्रव सातिशयी होवे, तुम पूजत हों शिवपथगामी।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वास्रवविरहित-श्री अर्हत्परमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधाक्षत माला नेवज, वर दीप धूप फल अर्घ्य लिये।
प्रभु चरणों करें समर्पण हम, मिल जाय स्वात्मपद इसीलिए।।
पापास्रव पुण्यास्रव विरहित, ईर्यापथ आस्रव के स्वामी।
पुण्यास्रव सातिशयी होवे, तुम पूजत हों शिवपथगामी।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वास्रवविरहित-श्री अर्हत्परमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

अर्हत्प्रभु के चरण में, धारा तीन करंत।
मुझमें त्रिभुवन में प्रभो! कीजे शांति तुरंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला हरसिंगार ले, पुष्पांजलि विकिरंत।
मेरा तन मन स्वस्थ हो, समकितनिधि विलसंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ 108 अर्घ्य

–सोरठा –

सब संसारी जीव, कर्मास्रव करते सदा।
पुष्पांजली विकीर्य, पूजत सब आस्रव रूकें।।1।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अथ प्रथमवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्
(27 अर्घ्य)

–शंभु छंद –

मन वचन काय त्रय योग कहे, संमरंभ समारंभ आरंभा।
कृत कारित अनुमति चउकषाय, इनको आपस में गुणितांता।।
सब इक सौ आठ भेद होते, जो क्रोध करे मन संरंभ से।
इस रहित अर्हत्प्रभु को पूजूँ, मेरा मन क्रोध सभी विनशे।।1।।

ॐ ह्रीं क्रोधकृतमनःसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो पर से मन संरंभ क्रोध, करवाता कर्मास्रव करता।
इनसे विरहित अर्हंतों की, अर्चा से पापास्रव टलता।।
परमानंदामृत के इच्छुक, योगी भी जिन को ध्याते हैं।
उन अर्हंतों की पूजा कर, दुख दारिद्र दूर भगाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं क्रोधकारितमनःसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन से संरंभ क्रोधपूर्वक, उसका अनुमोदन जो करते।
उनके पापास्रव होते हैं, प्रभु पूजा से ही टल सकते।।
परमानंदामृत के इच्छुक, योगी भी जिन को ध्याते हैं।
उन अर्हंतों की पूजा कर, दुख दारिद्र दूर भगाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं क्रोधानुमतमनःसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो क्रोधित मन से समारंभ, करके पापास्रव करते हैं।
प्रभु सिद्धों के गुण गाते ही, सब अशुभ कर्म भी झड़ते हैं।।
परमानंदामृत के इच्छुक, योगी भी जिन को ध्याते हैं।
उन अर्हंतों की पूजा कर, दुख दारिद्र दूर भगाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं क्रोधकृतमनःसमारंभमुक्तायश्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो क्रोधित मन से समारंभ, करवाते पापास्रव करते।
प्रभु भक्ती से वे बंधे कर्म, फल दिये बिना भी झड़ सकते।।
परमानंदामृत के इच्छुक, योगी भी जिन को ध्याते हैं।
उन अर्हंतों की पूजा कर, दुख दारिद्र दूर भगाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं क्रोधकारितमनःसमारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीस्वाहा।

जो क्रोधित मन से समारंभ, करने वाले को अनुमति दें।
उनके जो कर्म बंधे वे भी, जिन भक्ती से फल नहिं भी दें।।
परमानंदामृत के इच्छुक, योगी भी जिन को ध्याते हैं।
उन अर्हंतों की पूजा कर, दुख दारिद्र दूर भगाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं क्रोधानुमतमनःसमारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

क्रोधित मन से आरंभ करें, मनकृत आरंभ क्रोधधारी।
ये कर्मबंध भव भव दुखप्रद, इन कर्मों से ही संसारी।।
परमानंदामृत के इच्छुक, योगी भी जिन को ध्याते हैं।
उन अर्हंतों की पूजा कर, दुख दारिद्र दूर भगाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं क्रोधकृतमनःआरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधित मन से आरंभ करे, उसको जो प्रेरित करते हैं।
वे पाप बंध कर जन्म मरण, दुःखों को भरते रहते हैं।।
परमानंदामृत के इच्छुक, योगी भी जिन को ध्याते हैं।
उन अर्हंतों की पूजा कर, दुख दारिद्र दूर भगाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं क्रोधकारितमनःआरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधित मन हो आरंभ करे, उसको जो अनुमति देते हैं।
वे गर्भवास के दुःख सहें, नाना संकट भर लेते हैं।।
परमानंदामृत के इच्छुक, योगी भी जिन को ध्याते हैं।
उन अर्हंतों की पूजा कर, दुख दारिद्र दूर भगाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं क्रोधानुमतमनःआरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौपाई छंद –

मान करे मन से संरंभ। पाप कर्म का करता बंध।।
इनसे रहित अर्हत् भगवान। नमूँ परम आनंद निधान।।10।।

ॐ ह्रीं मानकृतमनःसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान सहित जो मन संरंभ। उसे कराके कर्म निबंध।।
इनसे रहित अर्हत् भगवान। जजूँ परम आनंद निधान।।11।।

ॐ ह्रीं मानकारितमनःसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीत्स्वाहा।

मानसंरंभ मानयुत कहा। अनुमति देकर हर्षित रहा।।
इनसे रहित अर्हत् भगवान। नमूँ परम आनंद निधान।।12।।

ॐ ह्रीं मानानुमतमनःसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानसहित मन का व्यापार। समारंभ यह दुख दातार।।
इनसे रहित अर्हत् भगवान। जजूँ परम आनंद निधान।।13।।

ॐ ह्रीं मानकृतमनः समारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानसहित मन का व्यापार। करवाता जो मूढ़ अपार।।
इनसे रहित अर्हत् भगवान। नमूँ परम आनंद निधान।।14।।

ॐ ह्रीं मानकारितमनःसमारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारंभ जो मान समेत। अनुमोदें आतमदुख हेत।।
इनसे रहित अर्हत् भगवान। जजूँ परम आनंद निधान।।15।।

ॐ ह्रीं मानानुमतमनःसमारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान सहित मन से आरंभ। कार्य करे जो दुख काफंद।।
इनसे रहित अर्हत् भगवान। नमूँ परम आनंद निधान।।16।।

ॐ ह्रीं मानकृतमनःआरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान सहित मन से आरंभ। करवाते वे पाप प्रबंध।।
इनसे रहित अर्हत् भगवान। जजूँ परम आनंद निधान।।17।।

ॐ ह्रीं मानकारितमनःआरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान सहित मन से आरंभ। अनुमति दे हो आस्रव बंध।।
इनसे रहित अर्हत् भगवान। नमूँ परम आनंद निधान।।18।।

ॐ ह्रीं मानानुमतमनःआरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पद्धड़ी छंद –

माया युत मन संरंभ जान। तिर्यंच गती का है निदान।।
इनसे विरहित अर्हंत देव। मैं जजूँ करूँ तुम चरण सेव।।19।।

ॐ ह्रीं मायाकृतमनःसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मायायुत मन संरंभ होय। जो करवाते नितमुदित होय।।
इनसे विरहित अर्हंत देव। मैं जजूँ करूँ तुम चरण सेव।।20।।

ॐ ह्रीं मायाकारितमनःसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मायायुतमन संरंभ लीन। अनुमति देते वे सौख्य हीन।।
इनसे विरहित अर्हंत देव। मैं जजूँ करूँ तुम चरण सेव।।21।।

ॐ ह्रीं मायानुमतमनःसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मायायुत मन का समारंभ। जो स्वयं करें वे भव भ्रमंत।।
इनसे विरहित अर्हंत देव। मैं जजूँ करूँ तुम चरण सेव।।22।।

ॐ ह्रीं मायाकृतमनःसमारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया से मन का समारंभ। जो करवाते वे करें बंध।।
इनसे विरहित श्री अर्हंत देव। मैं जजूँ करूँ तुम चरण सेव।।23।।

ॐ ह्रीं मायाकारितमनःसमारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

माया से मन का समारंभ। जो पर को अनुमति दे अनंद।।
इनसे विरहित अर्हंत देव। मैं जजूँ करूँ तुम चरण सेव।।24।।

ॐ ह्रीं मायानुमतमनःसमारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मायायुत मन आरंभ लीन। जो स्वयं करें वे स्वात्महीन।।
इनसे विरहित अर्हंत देव। मैं जजूँ करूँ तुम चरण सेव।।25।।

ॐ ह्रीं मायाकृतमनःआरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मायायुत मन आरंभ लीन। करवाते जो वे सौख्यहीन।।
इनसे विरहित अर्हंत देव। मैं जजूँ करूँ तुम चरण सेव।।26।।

ॐ ह्रीं मायाकारितमनःआरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मायायुत मन आरंभ होय। उसको अनुमति दे बंध होय।।
इनसे विरहित अर्हंत देव। मैं जजूँ करूँ तुम चरण सेव।।27।।

ॐ ह्रीं मायानुमतमनःआरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

परम अतीन्द्रिय ज्ञानसुख, वीर्य दर्श गुणवान्।
आस्रव रहित जिनेन्द्र को, नमूँ नमूँ सुखदान।।1।।

ॐ ह्रीं क्रोधमानमायारंभादिआस्रवरहिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा –

परम शुद्ध परिणाम हित, तुम पद पूजूँ आज।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, भरो आश जिनराज।।1।।

अथ द्वितीयवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्
(27 अर्घ्य)

–दोहा –

लोभ सहित मन से करें, जो संरंभ महान।
पाप बंधे इनसे रहित, नमूँ अर्हत् भगवान।।28।।

ॐ ह्रीं लोभकृतमनःसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभचित्त संरंभ को, जो करवाते जीव।
पाप बंधे इनसे रहित, नमूँअर्हत् सुख नींव।।29।।

ॐ ह्रीं लोभकारितमनःसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुमोदें जो लोभ युत, मन संरंभ करंत।
इन विरहित अर्हंत को, जजत मिले भव अंत।।30।।

ॐ ह्रीं लोभानुमतमनःसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ सहित मन से करें, समारंभ जो जीव।
पापास्रव करते सतत, नमतें हों दुख छीव।।31।।

ॐ ह्रीं लोभकृतमनःसमारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ सहित मन से करें, समारंभ नरवृंद।
करवाते वे मूढ़जन, नमूँ अर्हत् सुखकंद।।32।।

ॐ ह्रीं लोभकारितमनःसमारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

लोभसहित मन से करें, समारंभ जो कोय।
अनुमोदें उनसे रहित, जजूँ अर्हत् सुख होय।।33।।

ॐ ह्रीं लोभानुमतमनःसमारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभचित्त आरंभ जो, करें पाप में लीन।
उन विरहित अर्हंत को, नमूँ स्वात्म सुख लीन।।34।।

ॐ ह्रीं लोभकृतमनःआरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभचित्त आरंभयुत, करवाते जो पाप।
उन विरहित अर्हंत को, नमत बनूँ निष्पाप।।35।।

ॐ ह्रीं लोभकारितमनःआरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

लोभ चित्त आरंभयुत, अनुमोदें जो नित्य।
कर्म बांधते उन रहित, नमूँ अर्हद् गुण नित्य।।36।।

ॐ ह्रीं लोभानुमतमनःआरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–स्रग्विणी छंद –

क्रोध में वाक्य से कार्य की भूमिका।
नाम संरंभ है जो करें सर्वदा।।
पाप को बांधते चारगति में भ्रमें।
आपने नाशिया मैं जजूँ अर्घ्य ले।।37।।

ॐ ह्रीं क्रोधकृतवचनसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध में वचन से जो कराते सदा।
नाम संरंभ है कार्य की भूमिका।।
कर्म आते इन्हें आपने नाशिया।
मैं जजूँ अर्घ्य ले ज्ञान सम्यक् किया।।38।।

ॐ ह्रीं क्रोधकारितवचनसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

क्रोध से वचन संरंभ में अनुमती।
सर्व प्राणी इसी से लहें दुर्गती।।
आपने नाश के पाई पंचमगती।
मैं नमूँ मैं नमूँ पाऊं सम्यक्मती।।39।।

ॐ ह्रीं क्रोधानुमतवचनसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध से वच समारंभ जो आचरें।
कार्य को सर्व वस्तू इकट्ठी करें।।
ये समारंभ कर्मारि का मित्र है।
आपने नाशिया आप ही शर्ण हैं।।40।।

ॐ ह्रीं क्रोधकृतवचनसमारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध में वचन से जो समारंभ हो।
जो करावें इसे कर्म बांधें अहो।।
आप ही नाथ हो आज रक्षा करो।
अर्घ्य लेके जजूँ मम सुरक्षा करो।।41।।

ॐ ह्रीं क्रोधकारितवचनसमारंभमुक्तायश्री अर्हत्परमेष्ठिनेअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध से वचन व्यापार में अनुमती।
जो करें सो भ्रमें तीन जग में दुखी।।
आप जगवंद्य हो नाथ! रक्षा करो।
मैं जजूँ अर्घ्यं ले मम सुरक्षा करो।।42।।

ॐ ह्रीं क्रोधानुमतवचनसमारंभमुक्तायश्री अर्हत्परमेष्ठिनेअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध में वचन से कार्य को आरभे।
नाम आरंभ कृत कर्म को बांधते।।
आप आरंभ को त्याग परमातमा।
मैं जजूँ आपको होऊं शुद्धातमा।।43।।

ॐ ह्रीं क्रोधकृतवचनारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्य आरंभते को करे प्रेरणा।
क्रोध से वचन से पाप बांधे घना।।

जो तजे दोष को वे हि शुद्धातमा।
मैं जजूँ प्राप्त कर लूँ स्व परमातमा।।44।।

ॐ ह्रीं क्रोधकारितवचनारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्य आरंभते को अनूमोदते।
क्रोध में वचन से कर्म को बांधते।।
आप प्रभु घातिया कर्म से शून्य हो।
मैं जजूँ कर्मवैरी स्वयं चूर हों।।45।।

ॐ ह्रीं क्रोधानुमतवचनारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानकृत वचन संरंभ से पाप हो।
सो जगत में भ्रमें दुःख संताप हो।।
सर्व संरंभ से मुक्त परमात्मा।
मैं जजूँ साम्यपीयूष पाऊं यहाँ।।46।।

ॐ ह्रीं मानकृतवचनसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान से वचन से कार्य की भूमिका।
जो कराता सभी लोक में घूमता।।
आपने नाश के स्वात्मसंपद लिया।
मैं जजूँ आपको शुद्ध सम्यक् लिया।।47।।

ॐ ह्रीं मानकारितवचनसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान से वचन से कार्य संरंभ में।
जो अनूमोदता दुःख भोगें भ्रमें।।
आप सिद्धातमा मैं जजूँ भक्ति से।
ज्ञानज्योती मिले स्वात्मसंपत्ति से।।48।।

ॐ ह्रीं मानानुमतवचनसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान से वचन से जो समारंभ हो।
कार्य हेतू सभी वस्तु एकत्र हो।।

नाश के सिद्ध भगवान होते यहाँ।
मैं जजूँ स्वात्म पीयूष पीऊं यहाँ।।49।।

ॐ ह्रीं मानकृतवचनसमारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कराते समारंभ नित मान से।
वाक्य से प्रेरते जीव दुख पावते।।
मुक्त आत्मा सभी कर्म से दूर हैं।
मैं जजूँ सौख्य पाऊँ जो भरपूर है।।50।।

ॐ ह्रीं मानकारितवचनसमारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

जो समारंभ करते वचन मान से।
दें अनूमोदना कर्म को बांधते।।
मुक्त सर्वज्ञ को मैं नमूँ भाव से।
भेद विज्ञान पाऊं निजी चाव से।।51।।

ॐ ह्रीं मानानुमतवचनसमारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान से वचन से कार्य जो आरभें।
नित्य आरंभ से जीव हिंसा करें।।
आपने सर्व आरंभ परिग्रह तजा।
मैं जजूँ भक्ति से प्राप्त हो मुक्तिजा।।52।।

ॐ ह्रीं मानकृतवचनआरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान से वचन से कार्य आरंभ में।
जो करें प्रेरणा कर्म बांधें घने।।
मुक्ति हेतू धरा ध्यान मैं पूजहूँ।
रोग शोकादि दारिद्र से छूटहूँ।।53।।

ॐ ह्रीं मानकारितवचनआरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्य आरंभते को करे अनुमती।
मान में वाक्य से वे धरें दुर्गती।।
आपको पूजते सर्व संकट टलें।
मैं स्वयं मैं स्वयं आन संपत् मिलें।।54।।

ॐ ह्रीं मानानुमतवचनआरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं र्निपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

पंचमगति के हेतु मैं, नमन करूँ पंचांग।
परमानंद अमृत अतुल, सौख्य भरो सर्वांग।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वास्रवविरहिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा –

चिंतित फल देवें सदा, चिंतामणि चिद्रूप।
पुष्पांजलि से पूजते, भक्त बने शिवरूप।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अथ तृतीयवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्
(27 अर्घ्य)

–शेरछंद –

माया से वचन से स्वयं संरंभ जो करें।
जो कार्य को करने में भूमिका को विस्तरें।।
ये पापहेतु लाखों योनियों में भ्रमावें।
जो नाथ की पूजा करें निज संपदा पावें।।55।।

ॐ ह्रीं मायाकृतवचनसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो छद्म से वच से सदा संरंभ कराते।
वे भी करम से सर्व जग में निज को भ्रमाते।।
अर्हंत के गुणों की अर्चना प्रधान है।
जो पूजते वे भी बनें जग में महान हैं।।56।।

ॐ ह्रीं मायाकारितवचनसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया सहित वचन से जो संरंभ को करें।
उनकी करें अनुमोदना वे पाप को भरें।।
जिनवर की वंदना से सर्व दुःख दूर हों।
निज आत्म की अनुभूति से पीयूष पूर हो।।57।।

ॐ ह्रीं मायानुमतवचनसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया से वचन से जो समारंभ को करें।
चौरासी लाख योनियों में जन्म वे धरें।।
यदि जन्मसिंधु से तुम्हें तिरने की है इच्छा।
जिनवर की अर्चना करो मानो गुरु शिक्षा।।58।।

ॐ ह्रीं मायाकृतवचनसमारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया से वाक्य से जो समारंभ कराते।
चारों गती के दुख जलधि में निज को डुबाते।।
ये भूत प्रेत डाकिनी शाकिनि पिशाचिनी।
सब दूर हों जिनभक्ति से बाधाएं भी घनी।।59।।

ॐ ह्रीं मायाकारितवचनसमारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाह

माया से वचन से जो समारंभ को करें।
अनुमोदते उन्हें वे पशू योनि को धरें।।
जो इनसे मुक्त हो चुके त्रिभुवन ललाम हैं।
उनको अनंत बार ही मेरा प्रणाम है।।60।।

ॐ ह्रीं मायानुमतवचनसमारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो छद्म से वचन से आरंभ नित करें।
ये कार्य को प्रारंभ करते हर्ष मन धरें।।
इनके अशुभ प्रकृती बंधे दुर्गति में जा पड़ें।
जो इनसे मुक्त उन प्रभू के चरण हम पड़ें।।61।।

ॐ ह्रीं मायाकृतवचनारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया से वचन से सदा आरंभ कराते।
वे निज को और पर को तीन जग में भ्रमाते।।
जो इनसे मुक्त हैं उन्हों की वंदना करूँ।
निर्मूल हो माया कषाय, प्रार्थना करूँ।।62।।

ॐ ह्रीं मायाकारितवचनारंभमुक्तायश्री अर्हत्परमेष्ठिनेअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरंभ में अनुमोदना माया से वचन से।
तब कर्मशत्रु आवते रोके नहीं रुकते।।

इनसे विमुक्त समवसरण कमल पे रहें।
माया को जो तजें स्वयं ऊरधगती लहें।।63।।

ॐ ह्रीं मायानुमतवचनारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिनेअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो लोभ से वच से सदा संरंभ को करें।
वे आत्मशुद्धि ना करें जग में भ्रमण करें।।
प्रभु आपने इसको तजा निजधाम पा लिया।
मैं दुख से ऊब के ही आपकी शरण लिया।।64।।

ॐ ह्रीं लोभकृतवचनसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिनेअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो लोभ से वच से सदा संरंभ कराते।
वे भावशुद्धि के बिना निर्धन सदा रहते।।
इसको तजे से तीन लोक संपदा मिली।
मैं भी तुम्हें पूजूँ समस्त आपदा टलीं।।65।।

ॐ ह्रीं लोभकारितवचनसंरंभमुक्तायश्री अर्हत्परमेष्ठिनेअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संरंभ लोभ से वचन से उसमें अनुमती।
ये बुद्धि सबमें काल अनादी से ही रहती।।
प्रभु इनसे मुक्त आपके गुणों की अर्चना।
जो भक्त हैं वे कर सकेंगे यम की तर्जना।।66।।

ॐ ह्रीं लोभानुमतवचनसंरंभमुक्तायश्री अर्हत्परमेष्ठिनेअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वच से व लोभ से जो समारंभ कर रहे।
वे मोहनीय कर्मबंध दृढ़ ही कर रहे।।
इनसे विमुक्त आप पाद वंदना भली।
प्रभु भक्त के मन कंज की कलियाँ तुरत खिलीं।।67।।

ॐ ह्रीं लोभकृतवचनसमारंभमुक्तायश्री अर्हत्परमेष्ठिनेअर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

जो लोभ से वचन से समारंभ कराते।
वे भेदज्ञान शून्य हैं निज शुद्धि न पाते।।
इनसे विमुक्त नाथ की जो वंदना करें।
वे सब कषाय शत्रुओं की खंडना करें।।68।।

ॐ ह्रीं लोभकारितवचनसमारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

वच लोभ से जो समारंभ उसमें अनुमती।
वे तनु की व्याधियों से दुखी जग में दुर्मती।।
इनसे विमुक्त नाथ के गुणों की अर्चना।
संसारवार्धि से तिरूँ हो दुःख रंच ना।।69।।

ॐ ह्रीं लोभानुमतवचनसमारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

जो लोभ से वचन से भी आरंभ कर रहे।
वे छह निकाय जीव की हिंसा ही कर रहे।।
इनसे विमुक्त तीर्थनाथ की महापूजा।
ये सर्वसौख्यकारिणी इस सम नहीं दूजा।।70।।

ॐ ह्रीं लोभकृतवचनआरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो लोभ में वचन से भी आरंभ कराते।
वे पापपुंज बांधते निज ज्ञान न पाते।।
इनसे विमुक्त तीर्थपती की उपासना।
जो कर रहे वे पायेंगे शिवपथ की साधना।।71।।

ॐ ह्रीं लोभकारितवचनारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरंभ लोभ से वचन से उसमें अनुमती।
परिग्रह से ही आरंभ उससे होवे दुर्गती।।
इनसे विमुक्त नाथ की मैं वंदना करूँ।
संपूर्ण दुःख से बचूँ सिध्यंगना वरूँ।।72।।

ॐ ह्रीं लोभानुमतवचनारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–नरेन्द्र छंद –

क्रोध सहित तन से कार्यों की बने रूपरेखा जो।
सो संरंभ कहाता श्रुत में इनसे मुक्त हुये जो।।
उन अर्हंतों के चरणों में नित प्रति शीश नमाऊँ।
गर्भवास के दुःख मिटाकर निज समरस सुख पाऊँ।।73।।

ॐ ह्रीं क्रोधकृतकायसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध सहित तन से कार्यों को करवाने की रुचि से।
पाप कमाते सब संसारी पंच परावृत करते।।
इनसे मुक्त हुये जिनवर को कोटी-कोटि नमन हो
पंचेन्द्रिय के विषय दूर हों सर्व कषाय शमन हों।।74।।

ॐ ह्रीं क्रोधकारितकायसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध सहित तन से कुछ करना करे भूमिका कोई।
अनुमति देकर पाप बढ़ाते महामूढ़ जन सो ही।।
इनसे मुक्त हुये जिनवर को कोटी-कोटि नमन हो।
पंचेन्द्रिय के विषय दूर हों सर्व कषाय शमन हों।।75।।

ॐ ह्रीं क्रोधानुमतकायसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध सहित तन से कार्यों की सामग्री को जोड़े।
समारंभ यह नरक निगोदों में ले जाकर छोड़े।।
इनसे मुक्त हुये जिनवर को कोटी-कोटि नमन हो।
पंचेन्द्रिय के विषय दूर हों सर्व कषाय शमन हों।।76।।

ॐ ह्रीं क्रोधकृतकायसमारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्य हेतु पर से सामग्री एकत्रित करवाता।
क्रोध करे तन से जो फिर भी नहीं किसी से नाता।।
इनसे मुक्त हुये जिनवर को कोटी-कोटि नमन हो।
पंचेन्द्रिय के विषय दूर हों सर्व कषाय शमन हों।।77।।

ॐ ह्रीं क्रोधकारितकायसमारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध सहित तन से जो करते समारंभ दे अनुमति।
बिना हेतु ये पाप उपार्जे नहीं मिली है सन्मति।।
इनसे मुक्त हुये जिनवर को कोटी-कोटि नमन हो
पंचेन्द्रिय के विषय दूर हों सर्व कषाय शमन हों।।78।।

ॐ ह्रीं क्रोधानुमतकायसमारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध सहित तन से आरंभे पाँच पाप आदिक जो।
पाँच परावर्तन कर करके जग में भ्रमण करें वो।।

इनसे मुक्त हुये जिनवर को कोटी-कोटि नमन हो।
पंचेन्द्रिय के विषय दूर हों सर्व कषाय शमन हों।।79।।

ॐ ह्रीं क्रोधकृतकायारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध करावे काय क्रिया से बहु आरंभ कराता।
तन की व्याधि करोड़ों भोगे कभी न पावे साता।।
इनसे मुक्त हुये जिनवर को कोटी-कोटि नमन हो।
पंचेन्द्रिय के विषय दूर हों सर्व कषाय शमन हों।।80।।

ॐ ह्रीं क्रोधकारितकायारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध सहित काया से अनुमति देता आरंभी को।
नाना काय धरे मर मर कर भव भव में दुःखी हो।।
इनसे मुक्त हुये जिनवर को कोटी-कोटि नमन हो।
पंचेन्द्रिय के विषय दूर हों सर्व कषाय शमन हों।।81।।

ॐ ह्रीं क्रोधानुमतकायारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

समवसरणपति देव, अखिल अमंगल को हरें।
नित्य करूँ मैं सेव, नित नव नव मंगल भरें।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वास्रवविरहिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

दोहा – **धर्मचक्र के अधिपती, त्रिभुवन पति जिनराज।**
सुमन चढ़ाकर पूजहूँ, नमूँ नमूँ नत माथ।।1।।

अथ चतुर्थवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्
(27 अर्घ्य)

मान सहित काया से जो संरंभ करे नित रुचि से।
नीच गोत्र में जन्म धरे फिर दुःख सहे नित तन से।।
इनसे विरहित अर्हंतों को कोटी-कोटि नमन हो।
पंचेन्द्रिय के विषय दूर हों सर्व कषाय शमन हों।।82।।

ॐ ह्रीं मानकृतकायसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान सहित काया से कराता जो संरंभ सदा ही।
देवगती में भी यदि जन्में कुत्सित गती धरे ही।।
इनसे विरहित अर्हंतों को कोटी-कोटि नमन हो।
पंचेन्द्रिय के विषय दूर हों सर्व कषाय शमन हों।।83।।

ॐ ह्रीं मानकारितकायसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान से काया से संरंभे, उसको अनुमति देवे।
पाप पुण्य का आस्रव करके, दुःख निकट कर लेवे।।
इनसे विरहित अर्हंतों को, कोटी-कोटि नमन हो।
पंचेन्द्रिय के विषय दूर हों, सर्व कषाय शमन हों।।84।।

ॐ ह्रीं मानानुमतकायसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मद से तन से समारंभ कर, कर्मों को नित बांधे।
मानस शारीरिक आगंतुक सभी दुःखों को साधे।।
इनसे विरहित अर्हंतों को कोटी-कोटि नमन हो।
पंचेन्द्रिय के विषय दूर हों सर्व कषाय शमन हों।।85।।

ॐ ह्रीं मानकृतकायसमारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मद से तन से समारंभ जो सदा कराता रहता।
इहभव में परभव में भी तो दुख संकट बहु सहता।।
इनसे विरहित अर्हंतों को कोटी-कोटि नमन हो।
पंचेन्द्रिय के विषय दूर हों सर्व कषाय शमन हों।।86।।

ॐ ह्रीं मानकारितकायसमारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

मान से तन से समारंभ, करते को अनुमति देवे।
जन्म मरण के दुख सह-सहकर, बीज पाप का बोवे।।
इनसे विरहित अर्हंतों को, कोटी-कोटि नमन हो।
पंचेन्द्रिय के विषय दूर हों, सर्व कषाय शमन हों।।87।।

ॐ ह्रीं मानानुमतकायसमारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान सहित तन से कार्यों को, आरंभे भव भव में।
संस्कारों से तनु धर-धर कर भ्रमण करे चहुंगति में।।

इनसे विरहित अर्हंतों को कोटी-कोटि नमन हो।
पंचेन्द्रिय के विषय दूर हों सर्व कषाय शमन हों।।88।।

ॐ ह्रीं मानकृतकायारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मद से तन से सदा कराता पर से आरंभों को।
कुगुरु कुशास्त्रों की शिक्षा से कुत्सित बुद्धि धरे जो।।
इनसे विरहित अर्हंतों को कोटी-कोटि नमन हो।
पंचेन्द्रिय के विषय दूर हों सर्व कषाय शमन हों।।89।।

ॐ ह्रीं मानकारितकायारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मद से काया से आरंभित कार्यों को अनुमोदे।
नाना कर्मों को नित बांधे निज पर को भी दुख दे।।
इनसे विरहित अर्हंतों को कोटी-कोटि नमन हो।
पंचेन्द्रिय के विषय दूर हों सर्व कषाय शमन हों।।90।।

ॐ ह्रीं मानानुमतकायारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–गीता छंद –

माया से तनु से जो सदा संरंभ करते प्रेम से।
वे कर्मबंधन से बंधे बहु दुःख सहते देह से।।
आस्रव रहित अर्हंतप्रभु की जो सदा पूजा करें।
वे पुनर्भव के दुःख से छूटें न फिर काया धरें।।91।।

ॐ ह्रीं मायाकृतकायसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया से तनु से जो कराते हैं सदा संरंभ को।
तिर्यंच योनी में पड़ें वहाँ कष्ट दुःख असंख्य हो।।
आस्रव रहित अर्हंतप्रभु की जो सदा पूजा करें।
वे पुनर्भव के दुःख से छूटें न फिर काया धरें।।92।।

ॐ ह्रीं मायाकारितकायसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो छद्म से तन से करें संरंभ उसमें अनुमती।
वे मूढ़ भेदविज्ञान बिना नहिं पा सकेंगे सद्गती।।

आस्रव रहित अर्हंतप्रभु की जो सदा पूजा करें।
वे पुनर्भव के दुःख से छूटें न फिर काया धरें।।93।।

ॐ ह्रीं मायानुमतकायसंरंभमुक्तायश्री अर्हत्परमेष्ठिनेअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया निमित तन से समारंभे इकट्ठी वस्तु हों।
सम्यक्त्व बिन समता नहीं पाते उठाते दुःख को।।
आस्रव रहित अर्हंतप्रभु की जो सदा पूजा करें।
वे पुनर्भव के दुःख से छूटें न फिर काया धरें।।94।।

ॐ ह्रीं मायाकृतकायसमारंभमुक्तायश्री अर्हत्परमेष्ठिनेअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया से तनु से समारंभों को कराते प्रेम से।
चारित्र बिन संसार में दुःख भोगते हैं देह से।।
आस्रव रहित अर्हंतप्रभु की जो सदा पूजा करें।
वे पुनर्भव के दुःख से छूटें न फिर काया धरें।।95।।

ॐ ह्रीं मायाकारितकायसमारंभमुक्तायश्री अर्हत्परमेष्ठिनेअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तनु से समारंभें उन्हें माया व तनु से अनुमती।
तप बिना कर्मास्रव न सूखें फिर धरें तिर्यग्गती।।
आस्रव रहित अर्हंतप्रभु की जो सदा पूजा करें।
वे पुनर्भव के दुःख से छूटें न फिर काया धरें।।96।।

ॐ ह्रीं मायानुमतकायसमारंभमुक्तायश्री अर्हत्परमेष्ठिनेअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया धरें तन से करें आरंभ जो भव मूल है।
जिन भक्ति बिन भव में भ्रमें पावें न वो भव कूल है।।
आस्रव रहित अर्हंतप्रभु की जो सदा पूजा करें।
वे पुनर्भव के दुःख से छूटें न फिर काया धरें।।97।।

ॐ ह्रीं मायाकृतकायारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया सहित तनु से कराते बहुत ही आरंभ जो।
जिनशास्त्र के स्वाध्याय बिन साता न पाते रंच वो।।
आस्रव रहित अर्हंतप्रभु की जो सदा पूजा करें।
वे पुनर्भव के दुःख से छूटें न फिर काया धरें।।98।।

ॐ ह्रीं मायाकारितकायारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मायासहित तनु से करें आरंभ उसमें अनुमती।
दिग्वस्त्र गुरु की भक्ति बिन मिलती नहीं है शुभ मती।।
आस्रव रहित अर्हंतप्रभु की जो सदा पूजा करें।
वे पुनर्भव के दुःख से छूटें न फिर काया धरें।।99।।

ॐ ह्रीं मायानुमतकायारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो लोभ से तनु से करें संरंभ चहुँगति में भ्रमें।
नित करें खोटे देव की भक्ती न जिनवच में रमें।।
आस्रव रहित अर्हंतप्रभु की जो सदा पूजा करें।
वे पुनर्भव के दुःख से छूटें न फिर काया धरें।।100।।

ॐ ह्रीं लोभकृतकायसरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो लोभ वश तनु से कराते अन्य से संरंभ को।
जिनदेव की भक्ती बिना पाते न सुख के मर्म को।।
आस्रव रहित अर्हंतप्रभु की जो सदा पूजा करें।
वे पुनर्भव के दुःख से छूटें न फिर काया धरें।।101।।

ॐ ह्रीं लोभकारितकायसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संरंभ करते देख अनुमति दें तनू से लोभ से।
संसार में रुलते रहें नहिं छूटते भव रोग से।।
आस्रव रहित अर्हंतप्रभु की जो सदा पूजा करें।
वे पुनर्भव के दुःख से छूटें न फिर काया धरें।।102।।

ॐ ह्रीं लोभानुमतकायसंरंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो लोभवश तन की क्रिया से समारंभी हो रहे।
जिनधर्म बिन खोटे गुरू के वचन से भव दुःख सहें।।
आस्रव रहित अर्हंतप्रभु की जो सदा पूजा करें।
वे पुनर्भव के दुःख से छूटें न फिर काया धरें।।103।।

ॐ ह्रीं लोभकृतकायसमारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

जो समारंभी लोभवश तनु से करें पर प्रेरणा।
उनके चतुर्गति भ्रमण में निज आत्म सुख का लेश ना।।
आस्रव रहित अर्हंतप्रभु की जो सदा पूजा करें।
वे पुनर्भव के दुःख से छूटें न फिर काया धरें।।104।।

ॐ ह्रीं लोभकारितकायसमारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

अनुमोदते जो लोभवश तनु से समारंभी जना।
वे मोक्षपथ के बिना व्यंतर योनि में दुख लें घना।।
आस्रव रहित अर्हंतप्रभु की जो सदा पूजा करें।
वे पुनर्भव के दुःख से छूटें न फिर काया धरें।।105।।

ॐ ह्रीं लोभानुमतकायसमारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

जो लोभ से तनु से करें आरंभ बहुविध प्रेम से।
नरकायु बांधें सागरों तक दुःख भोगें नर्क के।।
आस्रव रहित अर्हंतप्रभु की जो सदा पूजा करें।
वे पुनर्भव के दुःख से छूटें न फिर काया धरें।।106।।

ॐ ह्रीं लोभकृतकायारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो लोभवश तनु से कराते अन्य से आरंभ को।
वे भी निगोदों के दुखों को सहें पापारंभ सों।।
आस्रव रहित अर्हंतप्रभु की जो सदा पूजा करें।
वे पुनर्भव के दुःख से छूटें न फिर काया धरें।।107।।

ॐ ह्रीं लोभकारितकायारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरंभ करते देख तनु से लोभवश अनुमति करें।
वे भी कुमानुषयोनि में चिरकाल तक बहु दुख भरें।।
आस्रव रहित अर्हंतप्रभु की जो सदा पूजा करें।
वे पुनर्भव के दुःख से छूटें न फिर काया धरें।।108।।

ॐ ह्रीं लोभानुमतकायारंभमुक्ताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

धर्मतीर्थ के नाथ तुम, धर्म चक्रधर धीर।
पूरण अर्घ्य चढ़ाय के, पाऊँ मैं भव तीर।।109।।

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरशतास्रवविरहिताय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य - **ॐ ह्रीं कर्मास्रवरहितानंतकेवलिभ्यो नमः।**

(सुगंधित पुष्प, लवंग या पीले चावल से 108 बार मंत्र जपें)

जयमाला

–दोहा –

तीर्थंकर जिनकेवली, आस्रव बंध विमुक्त।
गाऊँ तुम गुणमालिका, मोक्ष तत्त्व से युक्त।।1।।

–गीता छंद –

जय जय जिनेश्वरदेव, तीर्थंकर प्रभू जिनकेवली।
अर्हंत परमेष्ठी सकल, आस्रवरहित जिनकेवली।।
इनकी करूँ मैं वंदना, कर जोड़ नाऊं शीश को।
इनकी करूँ मैं अर्चना, शत-शत झुकाऊँ शीश को।।2।।

साता करम ही आस्रवे, ईर्यापथास्रव नाम ही।
हो केवली के इक समय, झड़ जाय नहिं हो बंध भी।।
आस्रव कहा जो सांपरायिक, सर्व जीवों में यही।
ये कर्म आठों बांधता, इससे भ्रमण जग में सही।।3।।

ये तीव्र मंद व ज्ञात अरु अज्ञात भावों से कहा।
निज शक्ति के कम या अधिक, से भेद नाना ले रहा।।
मिथ्यात्व पण पण अविरती, पंद्रह प्रमाद त्रियोग हैं।
चारों कषायों से सहित, भावास्रवों के भेद हैं।।4।।

आठों करम में दर्श मोहनि, चरित मोहनि दो प्रमुख।
सम्यक्त्व औ चारित्र को, नाशें अतः ये दुःखप्रद।।

सम्यक्त्व दर्शन ज्ञान चारित्र, मोक्ष के कारण कहे।
अतएव दर्शनमोहनी हेतू से हम बचना चहें।।5।।

जिनकेवली को रोग हो, आहार भी लेकर जियें।
श्रुत में कहा है मांस भक्षण, साधुगण निर्लज्ज हैं।।
जिनधर्म में कुछ गुण नहीं, सुर देवियाँ बलि मांगते।
इस विधि कहें जो मूढ़जन, वे दर्शमोहनि बांधते।।6।।

जो केवली श्रुत संघ को, जिनधर्म सुर को दोष दें।
वे मोहनी दर्शन अशुभ को, बांधकर दुःख भोगते।।
ये सब असत् अपवाद हैं, हे नाथ! मैं इनसे बचूँ।
सम्यक्त्व निधि रक्षित करूँ, हे नाथ! भव दुख से बचूँ।।7।।

क्रोधादि अशुभ कषाय का, उद्रेक जब अति तीव्र हो।
चारित्र मोहनि बंध हो, नहिं चरित धारण शक्ति हो।।
चारित्र मोह अनादि से, हे नाथ! निर्बल कर रहा।
मेरी अनंती आत्म शक्ती, छीनकर दुःख दे रहा।।8।।

करके कृपा हे नाथ! अब, चारित्रमोह निवारिये।
चारित्र संयम पूर्ण हो, भवसिंधु से अब तारिये।।
प्रभु आप ही पतवार हो, मुझ नाव भवदधि में फंसी।
अब हाथ का अवलंब दो, ना देर कीजे मैं दुखी।।9।।

इन आठ कर्मों में अधिक, बलवान एकहि मोह है।
इसके अट्ठाइस भेद हैं, बहु भेद सर्व असंख्य हैं।।
ये मोहनी ही स्थिती, अनुभाग बंध करे सदा।
ये मोहनी संसार का, है मूल कारण दुःखदा।।10।।

सब आस्रवों के भेद इक, सौ आठ पापास्रव करें।
इस हेतु इक सौ आठ मणि की, जपसरा से जप करें।।
तुम नाम मंत्रों को सदा, जो भव्य जपते भाव से।
वे पाप आस्रव रोककर नित पुण्य संचें चाव से।।11।।

व्रत पाँच समिती पाँच गुप्ती, तीन दशविध धर्म है।

बारह अनूप्रेक्षा परीषह, जय कहे बाईस हैं।।
ये कर्म आस्रव रोकते, संवर करें मुनिजन धरें।
हे नाथ! इनको दीजिए, हम कर्म आस्रव परिहरें।।12।।

जिनभक्ति पूजा मंत्र से, बहु पुण्य संपादन करें।
जिनभक्ति से बलभद्र चक्री, तीर्थकर पद भी धरें।।
जिनभक्ति से सब ऋद्धि सिद्धी, पाय शिवललना वरें।
जिनभक्ति से ही भक्त निज, आनंद अमृत रस भरें।।13।।

हे नाथ! ऐसी शक्ति दो, मैं सर्व ममता छोड़ दूँ।
निज देह से भी होऊं निर्मम, सब परिग्रह छोड़ दूँ।।
निज आत्म से ममता करूँ, निज आत्म की चर्चा करूँ।
निज आत्म में तल्लीन हो, परमात्म की अर्चा करूँ।।14।।

ऐसा समय तुरतहिं मिले, निजध्यान में सुस्थिर बनूँ।
उपसर्ग परिषह हों भले, निजतत्त्व में ही थिर बनूँ।।
निज आत्म अनुभव रस पियूँ, परमात्मपद की प्राप्ति हो।
निज 'ज्ञानमति' ज्योती दिपे, जो तीनलोक प्रकाशि हो।।15।।

–दोहा–

जब तक नहिं परमात्मपद, तुम पद में मन लीन।
एक घड़ी भी नहिं हटे, बनूं आत्म लवलीन।।16।।

ॐ ह्रीं सर्वास्रवविरहिताय श्री अर्हत्परमेष्ठिने जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शेर छंद–

जो भव्य पुण्यास्रव विधान भक्ति से करें।
वे पाप आस्रव का निरोध युक्ति से करें।।
संपूर्ण पुण्यास्रव मिले निज शक्ति को धरें।
कैवल्य 'ज्ञानमती' सहित मुक्ति को वरें।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

–दोहा –

शांतिनाथ भगवान को, हृदय कमल में ध्याय।
जंबूद्वीप के जिनभवन, नमूँ नमूँ सुखदाय।।1।।

हस्तिनागपुर तीर्थ पर, जंबूद्वीप प्रसिद्ध।
वसतिका में बैठकर, लिखा विधान विशुद्ध।।2।।

वीर अब्द पच्चीस सौ, उन्निस ख्यात महान्।
पौष कृष्ण ग्यारस तिथी, पुण्यास्रव सुविधान।।3।।

पूर्ण किया जिनभक्ति से, नूतन श्रेष्ठ विधान।
गणिनी ज्ञानमती मुझे, मिले स्वात्म विश्राम।।4।।

जब तक जिनशासन सुखद, तब तक रहे विधान।
सब जग में मंगल करे, भर दे पुण्य निधान।।5।।

।।इति पुण्यास्रव विधान प्रशस्ति ।।

आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–चाँद मेरे आजा रे.....

आरती गुणभंडारी की-2
जहाँ पुण्यभंडार भरा उन पुण्यभंडारी की।टेक.।।
मन वचन काय योगों से, कर्मों का आश्रव होता।
शुभ अशुभ उभय भेदों से, सब संसारी में होता।।
आरती गुण भंडारी की।।1।।

इक सौ अड़तालिस कर्मों, में पुण्य प्रकृतियाँ भी हैं।
शुभ योगों से ही बंधती, निश्चित वे प्रकृतियाँ भी हैं।।
आरती गुण भंडारी की।।2।।

तीर्थंकर कर्म प्रकृति भी, पुण्याश्रव से बंधती है।
तुम भी पुण्याश्रव कर लो, यह जिनवाणी कहती है।।
आरती गुण भंडारी की।।3।।

हीरे मोती के खजाने भी पुण्य से ही मिलते हैं।
चक्री व इन्द्र के वैभव, नहिं पाप से मिल सकते हैं।
आरती गुण भंडारी की।।4।।

जो पुण्य का फल जिन पद है, हम उसे नमन करते हैं।
''चन्दनामती'' प्रभु सुमिरन, सब पाप शमन करते हैं।।
आरती गुण भंडारी की।।5।।

भजन

-ब्र.कु. इन्दु जैन (संघस्थ)

तर्ज–मिलो न तुम.....

तीर्थंकर प्रभु को हम ध्याएं, अशुभ कर्म कट जाएं।
बनें पुण्यात्मा।।टेक.।।

आठ कर्मों की एक सौ, अड़तालीस प्रकृती मानी हैं।
शुभ अशुभ योगों से ही, बंधतीं कहे ये जिनवाणी है।।
करें कषाय शमन चारो फिर आस्रव, बंध न होए।
बनें पुण्यात्मा।।1।।

अर्हंत भक्ती आदिक शुद्ध योग पुण्यास्रव होता है,
जीवहिंसा झूठ आदिक अशुभ योग पापास्रव होता है।।
पुण्य करें अरु पाप तजें, सम्यक्त्व की ज्योति जगाएं।
बनें पुण्यात्मा।।2।।

पुण्य के प्रभाव से ही इन्द्र, चक्रि वैभव आदिक मिलते हैं।
जन्म मरण चक्र छूटे, सिद्धप्रभू भी बन सकते हैं।।
ऐसी युक्ति करें मुक्ती कन्या डाले वरमाला।
बनें पुण्यात्मा।।3।।

गणिनी ज्ञानमती माता ने, सारभूत पाठ यह बनाया है,
प्रभु भक्ती द्वारा कर्म, निर्जरा करो यही समझाया है।
शुभ कर्मों की ओर बढ़ाये, पाठ 'पुण्यास्रव' प्यारा।
बनें पुण्यात्मा।।4।।

सूर्य, चांद, तारे नभ में, जब तक सदा जगमगाएंगे,
इस विधान की महिमा का, गुणगान प्राणी तब तक गाएंगे।
मानव जन्म सफल हो सबका, 'इन्दु' भावना एक।
बनें पुण्यात्मा।।5।।

पुण्यास्रव व्रत विधि

संसार में प्रत्येक अच्छे या बुरे कार्यों को करने में सर्वप्रथम संरंभ, समारंभ और आरंभ क्रियायें होती हैं। मन, वचन और काय से प्रवृत्ति होती है जो कि कृत, कारित और अनुमोदना रूप से ही होती है। प्रत्येक के साथ क्रोध, मान, माया और लोभ ये कषायें अवश्य ही रहती हैं। इसलिये प्रथम ही संरंभ आदि तीन को मन आदि तीन से गुणा करके–3×3=9 भेद हुये पुनः इन नव को कृत आदि से गुणा किये तो 9×3=27 भेद हुए, अनंतर चार कषाय से गुणा करने से 27×4=108 भेद हो जाते हैं। इन्हीं पापास्रवों को रोकने एवं पुण्यास्रव को बढ़ाने हेतु माला में 108 दाने होते हैं। इन 108 व्रतों को करने से महान सातिशय पुण्य कर्मों का आस्रव होता है पुनः परंपरा से संपूर्ण आस्रव का अभाव होकर मोक्ष की प्राप्ति होती है। लौकिक फल तो संसार के चक्रवर्ती आदि के वैभव, इंद्र पद आदि तो सहज ही संभव हैं। अतः यह व्रत अवश्य ही करना चाहिए।

व्रत के दिन अर्हंत भगवान का या चौबीसी प्रतिमा का या किन्हीं भी तीर्थंकर का पंचामृत अभिषेक करके चौबीसी पूजा और पुण्यास्रव पूजा अवश्य करना चाहिए। उद्यापन में यथाशक्ति प्रतिमा विराजमान करना, 108 ग्रंथों का दान देना आदि करना चाहिए तथा पुण्यास्रव विधान करना चाहिए।

संरंभ–हिंसादि करने का मन में विचार करना।

समारंभ–हिसादि कर्मों के करने का अभ्यास करना।

आरंभ–हिंसादि क्रियाओं को प्रारंभ कर देना।

कृत–स्वयं करना।

कारित–दूसरों से कराना।

अनुमोदना या अनुमति–दूसरों के द्वारा हिंसादि क्रियाओं के करने को अच्छा कहना–समर्थन करना।

आगे मन, वचन, काय और क्रोध, मान, माया और लोभ के अर्थ स्पष्ट हैं।

इसका समुच्चय मंत्र निम्न प्रकार है–

जाप्य–ॐ ह्रीं कर्मास्रवरहितानन्तकेवलिभ्यो नमः।

यह व्रत इच्छानुसार अष्टमी-चतुर्दशी आदि किन्हीं भी तिथि को किया जा सकता है। इसमें 108 व्रत करने होते हैं। उत्तम विधि उपवास, मध्यम एक बार अल्पाहार और जघन्य में एक बार शुद्ध भोजन करना चाहिए।

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र–

1. ॐ ह्रीं क्रोधकृतमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
2. ॐ ह्रीं क्रोधकारितमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
3. ॐ ह्रीं क्रोधानुमतमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
4. ॐ ह्रीं क्रोधकृतमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
5. ॐ ह्रीं क्रोधकारितमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
6. ॐ ह्रीं क्रोधानुमतमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
7. ॐ ह्रीं क्रोधकृतमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
8. ॐ ह्रीं क्रोधकारितमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
9. ॐ ह्रीं क्रोधानुमतमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
10. ॐ ह्रीं मानकृतमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
11. ॐ ह्रीं मानकारितमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
12. ॐ ह्रीं मानानुमतमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
13. ॐ ह्रीं मानकृतमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
14. ॐ ह्रीं मानकारितमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
15. ॐ ह्रीं मानानुमतमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
16. ॐ ह्रीं मानकृतमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
17. ॐ ह्रीं मानकारितमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
18. ॐ ह्रीं मानानुमतमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
19. ॐ ह्रीं मायाकृतमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
20. ॐ ह्रीं मायाकारितमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
21. ॐ ह्रीं मायानुमतमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
22. ॐ ह्रीं मायाकृतमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
23. ॐ ह्रीं मायाकारितमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
24. ॐ ह्रीं मायानुमतमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
25. ॐ ह्रीं मायाकृतमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिन नमः।
26. ॐ ह्रीं मायाकारितमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
27. ॐ ह्रीं मायानुमतमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
28. ॐ ह्रीं लोभकृतमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
29. ॐ ह्रीं लोभकारितमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
30. ॐ ह्रीं लोभानुमतमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।

31. ॐ ह्रीं लोभकृतमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
32. ॐ ह्रीं लोभकारितमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
33. ॐ ह्रीं लोभानुमतमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
34. ॐ ह्रीं लोभकृतमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
35. ॐ ह्रीं लोभकारितमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
36. ॐ ह्रीं लोभानुमतमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
37. ॐ ह्रीं क्रोधकृतवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
38. ॐ ह्रीं क्रोधकारितवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
39. ॐ ह्रीं क्रोधानुमतवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
40. ॐ ह्रीं क्रोधकृतवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
41. ॐ ह्रीं क्रोधकारितवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
42. ॐ ह्रीं क्रोधानुमतवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
43. ॐ ह्रीं क्रोधकृतवचनारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।।
44. ॐ ह्रीं क्रोधकारितवचनारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
45. ॐ ह्रीं क्रोधानुमतवचनारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
46. ॐ ह्रीं मानकृतवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
47. ॐ ह्रीं मानकारितवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
48. ॐ ह्रीं मानानुमतवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
49. ॐ ह्रीं मानकृतवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
50. ॐ ह्रीं मानकारितवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
51. ॐ ह्रीं मानानुमतवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
52. ॐ ह्रीं मानकृतवचनआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
53. ॐ ह्रीं मानकारितवचनआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
54. ॐ ह्रीं मानानुमतवचनआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
55. ॐ ह्रीं मायाकृतवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
56. ॐ ह्रीं मायाकारितवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
57. ॐ ह्रीं मायानुमतवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
58. ॐ ह्रीं मायाकृतवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
59. ॐ ह्रीं मायाकारितवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
60. ॐ ह्रीं मायानुमतवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
61. ॐ ह्रीं मायाकृतवचनारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।

62. ॐ ह्रीं मायाकारितवचनारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
63. ॐ ह्रीं मायानुमतवचनारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
64. ॐ ह्रीं लोभकृतवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
65. ॐ ह्रीं लोभकारितवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
66. ॐ ह्रीं लोभानुमतवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
67. ॐ ह्रीं लोभकृतवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
68. ॐ ह्रीं लोभकारितवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
69. ॐ ह्रीं लोभानुमतवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
70. ॐ ह्रीं लोभकृतवचनारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
71. ॐ ह्रीं लोभकारितवचनारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
72. ॐ ह्रीं लोभानुमतवचनारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
73. ॐ ह्रीं क्रोधकृतकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
74. ॐ ह्रीं क्रोधकारितकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
75. ॐ ह्रीं क्रोधानुमतकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
76. ॐ ह्रीं क्रोधकृतकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
77. ॐ ह्रीं क्रोधकारितकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
78. ॐ ह्रीं क्रोधानुमतकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
79. ॐ ह्रीं क्रोधकृतकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
80. ॐ ह्रीं क्रोधकारितकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
81. ॐ ह्रीं क्रोधानुमतकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
82. ॐ ह्रीं मानकृतकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
83. ॐ ह्रीं मानकारितकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
84. ॐ ह्रीं मानानुमतकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
85. ॐ ह्रीं मानकृतकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
86. ॐ ह्रीं मानकारितकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
87. ॐ ह्रीं मानानुमतकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
88. ॐ ह्रीं मानकृतकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
89. ॐ ह्रीं मानकारितकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
90. ॐ ह्रीं मानानुमतकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
91. ॐ ह्रीं मायाकृतकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।

92. ॐ ह्रीं मायाकारितकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
93. ॐ ह्रीं मायानुमतकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
94. ॐ ह्रीं मायाकृतकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
95. ॐ ह्रीं मायाकारितकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
96. ॐ ह्रीं मायानुमतकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
97. ॐ ह्रीं मायाकृतकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
98. ॐ ह्रीं मायाकारितकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
99. ॐ ह्रीं मायानुमतकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
100. ॐ ह्रीं लोभकृतकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
101. ॐ ह्रीं लोभकारितकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
102. ॐ ह्रीं लोभानुमतकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
103. ॐ ह्रीं लोभकृतकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
104. ॐ ह्रीं लोभकारितकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
105. ॐ ह्रीं लोभानुमतकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
106. ॐ ह्रीं लोभकृतकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
107. ॐ ह्रीं लोभकारितकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
108. ॐ ह्रीं लोभानुमतकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।